Date – 10/09/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Spinoza : Pantheism

Scanned with CamScanner

सर्वेश्वरवाद (Pantheism)

स्पिनोजा के अनुसार ईश्वर या द्रव्य एक पूर्णतः स्वतंत्र, असीम और स्वयंभू सत्ता है। द्रव्य की परिभाषा देते हुए स्पिनोजा ने कहा है- "द्रव्य वह है जो आत्मनिहित हो और जिसका बोध अपने आप से होता हो"। स्पिनोजा ने द्रव्य को ही ईश्वर कहा है।

Scanned with CamScanner

जिसके कारण मानव अपनी जीवित स्थिति में कायम रहता है। यह प्राणशक्ति या तो बाह्य कारणों से या आंतरिक स्वरूप के कारण नियंत्रित होती है। यदि प्राणशक्ति आंतरिक स्वरूप से नियंत्रित हो तो इसे स्वतंत्र क्रिया कहते हैं। परन्तु यदि प्राणशक्ति बाह्य कारणों से नियंत्रित हो तो इसे भाव-संवेग कहते हैं। कामना, सुख और दुःख मौलिक संवेग है और इन्हीं के सम्मिश्रण से अन्य संवेग होते हैं। चूँकि भाव-संवेग, वासना आदि बाह्य कारणों से होता है जिन पर जीवों का कोई अधिकार नहीं रहता है। इसलिए इन्हें जीवों का बंधन कहा गया है।

स्पिनोजा की तत्वमीमांसा का अपरिहार्य परिणाम नियतिवाद है। स्पिनोजा न तो ईश्वर में और न ही मानव में इच्छा स्वतंत्रता स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार सारी घटनाएँ नियति-नियमों से संचालित है। ऐसी स्थिति में उसी क्रिया को स्वतंत्र कहा जा सकता है जो किसी वस्तु के अपने स्वरूप से ही संचालित होती है। यदि मानव व्यवहार भी आत्म-स्फुरित भावना से ही संचालित हो तो स्वतंत्र व्यवहार है। आत्म-स्फुरित भावना वह है जो मानवीय आत्मसत्ता के तत्व से निर्देशित और निर्धारित हो और उसी भावना को आत्मसत्ता के तत्व से निर्धारित होना समझा जाएगा जो स्पष्ट तथा परिस्पष्ट हो। स्पष्ट और परिस्पष्ट भावना बुद्धि से ही प्राप्त हो सकती है। इसलिए बौद्धिक जीवन ही स्वतंत्र जीवन है। बौद्धिक जीवन का परिपाक ईश्वर के प्रति 'बौद्धिक प्रेम' में होता है।

स्पिनोजा के दर्शन में ईश्वर प्रेम का एक विशेष अर्थ है। स्पिनोजा का ईश्वर प्रेम संवेगात्मक नहीं बल्कि ज्ञानात्मक है। इसलिए इसे उन्होंने 'बौद्धिक प्रेम' कहा है। फिर, स्पिनोजा ने कहा है कि साक्षात् अनुभूति से ही प्रेम हो सकता है। सच्चे आत्म-प्रेम

Scanned with CamScanner

प्रयोजनपूर्ण नहीं है बल्कि ईश्वर की प्रकृति का स्वाभाविक और अनिवार्य परिणाम है। विश्व का कण-कण ईश्वरमय है। इसलिए काल-सापेक्ष सृष्टि स्पिनोजा को स्वीकार्य नहीं है। ईश्वर का विश्व से काल-निरपेक्ष शाश्वत संबंध है।